साखी

Date
Page

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त होती है क्योंकि मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार समाप्त हो जाता है। यह को तो शीतलता प्रदान करती है तथा सुनने वालों को भी सुख की तथा प्रसन्नता की अनुभूति कराती है इसलिए सदा दूसरों को सुख पहुँचाने वाली व अपने को भी शीतलता प्रदान करने वाली मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

2. दीपक में एक प्रकाशपुंज होता है जिसके प्रभाव के कारण अंधकार नष्ट हो जाता है।

3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है और कण-कण ही ईश्वर है। ईश्वर की चेतना से ही यह संसार दिखाई देता है। चारों ओर ईश्वरीय चेतना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है लेकिन यह सब कुछ हम तब ~~कर~~ देखते जब हम ईश्वर की कृपा से हमें दिव्य चक्षु नहीं लेते तब तक कण कण में ईश्वर को ईश्वर में नहीं है। सकते

4. संसार में कई व्यक्ति सुखी है जो प्रभु प्राप्ति के लिए प्रयास रहे हैं? इसके सांसारिक विषयों में डूबकर आनंदपूर्वक सोता है। इसके विपरीत वह व्यक्ति जो प्रभु को पाने के लिए तड़प रहा है। यहाँ सोना का प्रतीक प्रभु प्राप्ति के प्रयासों से विमुख होने और जागना प्रभु प्राप्ति के लिए किए जा रहे प्रयासों को प्रतीक है।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदक को अपने निकट रखने का सुझाव दिया है, क्योंकि वही हमारा सबसे बड़ा हितैषी है अन्यथा झूठी प्रशंसा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले तो अनेक मिल जाते हैं।

6. ऐसे अधिक पढ़कर जीव का पढ़े सु पंडित होय पंक्ति के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि संसार में प्रेम अर्थात ईश्वर ही सत्य है। उसे पढ़ने या जानने वाला ही पंडित (ज्ञानी) बन सकता है।

7 कबीर की साखियों की भाषा की विशेषता है कि यह जन भाषा है। उन्होंने जागरुकता और जनभावनाओं को अपनी सहजसरल भाषा द्वारा साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया है। इसलिए तो हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इनकी भाषा को भावानुरूपिणी माना है अपनी चमत्कारिक भाषा के कारण आज भी इनके दोहे लोगों की जुबान पर है।